"हिंदी के नकेनवादी कवियों के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन"

पीएच.डी. हेतु शोध प्रस्ताव का प्रारूप

सत्र : 2021-22

शोध निर्देशक
डॉ० अनुरुद्ध सिंह
हिंदी, विभागाध्यक्ष
मारवाड़ी महाविद्यालय
दरभंगा

शोधार्थी
मनोज कुमार
अनुक्रमांक : E2209070
पंजीकरण संख्या : 21905990

हिंदी-विभाग

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,

कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, 846004

'हिंदी के नकेनवादी कवियों के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन'

प्रस्तावना

सन् 1943 ई० में सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' के सम्पादन में सात नये कवियों की कविताओं का एक संकलन 'तारसप्तक' नाम से प्रकाश में आया। बाद में 'दूसरा सप्तक' छपा और फिर 'तीसरा सप्तक' भी। तारसप्तक में प्रकाशित कविताएँ जिस शैली में लिखी गयी थीं उसे आलोचकों ने प्रयोगवाद की संज्ञा दी। आलोचकों के ऐसा कहने का आधार भी था। अज्ञेय ने 'तारसप्तक' की भूमिका में कहा था कि इसमें संकलित कवि प्रयोग कर रहे हैं, अन्वेषण कर रहे हैं। कई कवियों ने भी वक्तव्यों में 'प्रयोग' शब्द की चर्चा की थी। प्रयोग के नाम पर जो कविताएँ छप रही थीं वे रूप और वस्तु दोनों ही स्तरों पर प्रयोगधर्मी थीं। इन्हीं सब कारणों से इन कविताओं की विशेष पहचान के लिए आलोचकों ने इसका 'प्रयोगवाद' नामकरण किया। बाद में बहुत सारे नये कवि अपने प्रयोगों को किसी खास वाद में नहीं रखना चाहते थे। इसलिये उन्होंने इसका विरोध किया। इसलिये आगे चलकर अज्ञेय ने 'दूसरा सप्तक' की भूमिका लिखते हुए प्रयोग शब्द को अनावश्यक बतलाया और यह कहा कि प्रयोग अपने आप में साध्य नहीं है, साधन है। इसलिये कि व्यक्तित्व को व्यापक सत्य बनाने के लिए तथा भाषा में अधिक सारगर्भित अर्थ भरने के लिए इसका उपयोग किया जा रहा है। अतः प्रयोग का कोई 'वाद' नहीं हो सकता।

अज्ञेय की इस सफाई से बहुत सारे कवि संतुष्ट नहीं हुए। उसमें उन्हें उनकी कोई चाल नजर आ रही थी। इसलिए कुछ कवियों ने रचनात्मक रूप में अज्ञेय के प्रयोगवाद का विरोध शुरू किया। ऐसे कवियों में बिहार के तीन नये कवियों की विशेष भूमिका थी। ये तीन नये कवि थे-नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार तथा नरेश। इन कवियों ने अज्ञेय के प्रयोगवाद का प्रतिवाद किया। वे मानते थे कि 'तारसप्तक' में जिन कविताओं की व्याख्या प्रयोगवाद कविता के रूप में की गयी है, वे दरअसल प्रयोगशील हैं। इन कवियों ने नरेश द्वारा संपादित पत्रिका 'प्रकाश' में सन् 1952 में प्रयोग 'दससूत्री' नाम से अपनी घोषणा प्रकाशित की। उस घोषणा में प्रयोगशीलता और प्रयोगवाद का अर्थ भिन्न रूप में लिया गया था। इन कवियों ने अपने वाद को 'प्रपद्यवाद' संज्ञा से अभिहित किया और तीनों के नामों के प्रथम

Arvind

अक्षर को लेकर 'नकेन के प्रपद्य' नाम से अपनी पहली पुस्तक प्रकाशित की। उस पुस्तक में भी प्रयोग द्वादश सूत्री को छापा गया, जिसे **प्रपद्यवाद के घोषणा-पत्र का प्रारूप** कहा गया है? प्रयोग के वे **द्वादश सूत्र** निम्नलिखित हैं-

1. प्रयोगवाद भाव और व्यंजना का स्थापत्य है।
2. प्रयोगवाद सर्वतंत्र-स्वतंत्र है, उसके लिए शास्त्र या दल निर्धारित नियम अनुपयुक्त है।
3. प्रयोगवाद महान पूर्व व्यक्तियों की परिपाटियों को भी निष्प्राण मानता है।
4. प्रयोगवाद दूसरों के अनुकरण की तरह अपना अनुकरण भी वर्जित समझता है।
5. प्रयोगवाद को मुक्त काव्य की नहीं, स्वच्छंद काव्य की स्थिति अभीष्ट है।
6. प्रयोगवाद प्रयोग को साधन मानता है, प्रयोगवादी साध्य।
7. प्रयोगवाद की दृक्काक्यपदीय प्रणाली है।
8. प्रयोगवाद के लिए जीवन और कोष कच्चे माल की खान है।
9. प्रयोगवाद प्रयुक्त प्रत्येक शब्द और छंद का स्वयं निर्माता है।
10. प्रयोगवाद दृष्टिकोण का अनुसंधान है।

प्रयोगवाद विशेष अथवा प्रपद्यवाद के दो नये सूत्र सन् 1954 ई. में प्रस्तुत किए गए-

11. प्रयोगवाद मानता है कि पद्य में उत्कृष्ट केन्द्रण होता है और यही गद्य और पद्य में अन्तर है।
12. प्रपद्यवाद मानता है कि चीजों का एकमात्र सही नाम होता है।

उपर्युक्त सूत्रों से हम निष्कर्ष निकालते हैं कि प्रपद्यवाद प्रयोग का दर्शन है, क्योंकि वह प्रयोग को साध्य मानता है और भाव तथा भाषा विचार तथा अभिव्यक्ति, आवेश तथा आत्मप्रेषण, तत्त्व तथा रूप- सभी में प्रयोग को आवश्यक समझता है। उसके अनुसार कविता न तो भावों विचारों अथवा दर्शनों में लिखी जाती है और न छन्दों, अलंकारों इत्यादि से ही, अपितु वह शब्दों में लिखी जाती है। प्रपद्यवाद मानता है कि कविता की वास्तविक प्रेरणा वस्तुस्थिति से ही मिलती है। वस्तु द्रष्टा के भीतर भाव-छवियाँ उत्पन्न करती है। इन छवियों के साथ द्रष्टा की असंगतियाँ मिलकर एक दृष्टि-बिन्दु उत्पन्न करती हैं और जब उस दृष्टि-बिन्दु से कवि वस्तु को देखता है, तब वह शक्ति के एक नए संश्लेषण के रूप में दिखाई पड़ती है। इस प्रकार कविता में सदा ही पुनर्निर्माण हुआ करता है। बाद में प्रकाशित नकेन-2 (प्रकाशन वर्ष 1981 प्रथम संस्करण) में प्रपद्यवाद के घोषणा-पत्र का प्रारूप (प्रपद्य अष्टादश सूत्री) प्रकांशित हुआ है। **पूर्व-प्रकाशित 12 सूत्रों के अतिरिक्त इनमें छह सूत्र और जोड़े गये हैं-**

Anuradha

13. प्रपद्यवाद आयाम की खोज है और उससे अभिनिष्क्रमण भी ठीक वैसे जैसे वह भाव और व्यंजना का स्थापत्य है और उससे अभिनिष्क्रमण भी।

14. प्रपद्यवाद चित्रेतना है।

15. प्रपद्यवाद मिथक का संयोजक नहीं, स्रष्टा है।

16. प्रपद्यवाद बिम्ब का काव्य नहीं, काव्य का बिम्ब है।

17. प्रपद्यवाद सम्पूर्ण अनुभव है।

18. प्रपद्यवाद अभिव्यक्त काव्य-रुचि है।

प्रपद्यवाद तरह-तरह से वस्तु-संश्लेष को देखता है और उसे नयी संगतियों में देख सकने के कारण ही प्रपद्यवादी कवि अपने आधार के लिए नैतिक स्वीकृति पाता है। स्वीकृत संगतियाँ व्यवहार में घिस-पिट जाने के कारण व्यंजक नहीं होती। चूँकि वे स्वीकृत और नित्य अनुभूति होती हैं, इसलिए नयी संगतियों की जटिलताओं को शब्दों में निर्णीत करते चलना प्रपद्यवाद का दृष्टिकोण होता है।

प्रपद्यवादी काव्य-धारा इन्हीं अर्थों में हिन्दी की पारम्परिक काव्यधारा से अलग एवं विद्रोहशील हैं। प्रपद्यवाद की अनुभूति को शब्द से अलग नहीं देखता, वह प्रत्येक अनुभव को संश्लेष के रूप में देखता है। स्वीकृत संगतियों की अनुभूति स्वीकृत शब्द-संगतियों से ही होती है, इसलिए नवीन संगतियों के लिए नवीन शब्द-संगति की आवश्यकता होगी, क्योंकि इनके अनुसार कविता शब्दों में लिखी जाती है और शब्द संगति से अर्थ ग्रहण करते हैं।

प्रपद्यवाद संप्रेषण अथवा साधारणीकरण के आधुनिक भाष्य को अपूर्ण मानता है। 'तारसप्तक' में सन्निविष्ट अपने वक्तव्य में अज्ञेय ने साधारणीकरण और सम्प्रेषण को कवि कर्म की मौलिक समस्या बताया था और यह स्पष्ट कहा था कि जो व्यक्ति का अनुभूत है, इसे समष्टि तक कैसे अपनी सम्पूर्णता में पहुँचाया जाय, यही पहली समस्या है जो प्रयोगशीलता को ललकारता है। 'दूसरा सप्तक' की भूमिका में अज्ञेय ने साधारणीकरण पर तनिक विस्तार से विचार किया था। उनका कहना था कि नये कवि साधारणीकरण के सिद्धांत को पूर्णतया अस्वीकार करते हैं और इसलिए वे प्रयोगों की आवश्यकता भी सिद्ध करते हैं। प्राचीन समय में जब ज्ञान-विज्ञान के विविध क्षेत्रों का पार्थक्य नहीं हुआ था, वह विविध वर्गों-साहित्य, गणित, विज्ञान आदि में बँटा नहीं था और सामान्य शिक्षित व्यक्ति इन सभी ज्ञान के अंगों से परिचित था, सभी एक भाषा तथा एक प्रकार के मुहावरे का प्रयोग करते थे तो ऐसी स्थिति में साधारणीकरण का प्रश्न आसान था। लेकिन आज गणितज्ञ, अर्थशास्त्री इत्यादि सभी की शब्दावली भिन्न-भिन्न हैं और कवि अपने व्यक्ति-सत्य को अर्थात् किसी वस्तु अथवा तथ्य के प्रति अपने रागात्मक सम्बन्धों को दूसरों तक पहुँचाना चाहता है। बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप कवि की संवेदनाएँ

Arundeh

उलझी हुई तथा इसकी अभिव्यक्ति के लिए वह जिस भाषा का प्रयोग करता है, वह प्रायः वैयक्तिक हो जाती है, क्योंकि परिचित शब्दों में 'नया अर्थ' भरने का प्रयास करता है। इसलिए अज्ञेय नये कवियों के लिए साधारणीकरण की समस्या को जटिल मानते है । प्रपद्यवाद साधारणीकरण की इस व्याख्या को अपूर्ण मानता है। वह यह भी मानता है कि शब्द अपूर्ण होते हैं, इसलिए वह पाठक की स्वतंत्रता को वापस देता है । प्रेषण गद्य का गुण है। दैनिक जीवन में हम गद्य ही बोलते हैं। वहाँ शब्दों को एक धारणा में बाँधकर हम चलते हैं। यहाँ विशेष केन्द्र नहीं होता है, इसलिए एक सामान्य सतह पर इसका प्रेषण और इसकी अभिव्यक्ति सम्भव है। लेकिन, केन्द्रधर्मा काव्य की उस दैनंदिन जीवन की भाषा (गद्य) की व्यवस्था को व्यक्तिरेक करके प्रकट करना पड़ता है ।

कविता सामान्य अनुभव के क्षेत्र से आगे के अनुभव को प्रकट करती है, इसलिए ही यह व्यक्तिरेक सर्वथा अपेक्षित होता है । लेकिन यह शब्द कवि को अपने में पकड़ लेते हैं, पाठकों को भी कवि लिखने के पूर्व ही काव्य का हो चुका होता है, इसलिए उसका आदि उसके अंत को निश्चित कर देता है । शब्द कागज पर चिन्ह मात्र हैं। उन्हें जब पाठक पढ़ता है तभी वे पाठक को इसकी स्वतंत्रता देते हैं कि वह अपने को उन शब्दों में देख सकें । तात्पर्य यह कि कवि अपने शब्दों से पाठकों को प्रतिश्रुत नहीं करा देता, यानी सामान्य अनुभव के क्षेत्र से आगे जाकर कविता पाठक को भी स्वतंत्र कर देती है, प्रक्रिया के संदर्भ में भी।

आज जब साधारणीकरण आसान नहीं रह गया है, ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में विशिष्टीकरण हो रहा है, यह स्वतंत्रता और भी अधिक आवश्यक हो गयी है । विविध को ग्रहण करने का अवकाश कम होता जा रहा है। आज कविता मानव-मन की मुक्ति का माध्यम बन गयी है। कविता के सामने आज एक बड़ा उद्देश्य आ गया है, इसलिए उसने संक्षेप शैली अपनायी है और इसलिए उसमें रागात्मक अनुक्रम आ गया है। रागात्मक अनुक्रम भागती हुई निरवकाश सभ्यता की शिराओं को प्रभावित करने का और मुक्त आसंग (Free Association) अपने को सुरक्षित कर, आधुनिक दीक्षित मानव मन द्वारा उसकी निविड़ता के अवगाहन का आवश्यक साधन है। उपचेतन की समस्या कविता की सनातन समस्या है। पहले का कवि अपने व्यक्तित्व का आरोप कर अपचेतन की जटिलता पर खड़ा होता था । उसकी गर्वोक्तियाँ इस दृष्टि से द्रष्टव्य हैं। नया कवि मुक्त आसंग के सहारे यानी उपचेतन की ही शक्ति से उसकी जटिलता को परास्त करके मार्ग निकालना चाहता है। उसकी दृष्टि में व्यक्तित्व का आरोप, वस्तु और काव्य और इस प्रकार काव्य और पाठक के बीच का व्यवधान है। वह पाठक को बौद्धिक नहीं, ऐन्द्रिक

Arunlah

आघात देना चाहता है, भाषा की सम्भावनाओं की खोज करना तब धर्म हो जाता है, प्रपद्यवादी कवियों ने इसी की खोज की है और इन्हीं अर्थों में वे अपने पूर्ववर्तियों से सर्वथा भिन्न है ।

इस प्रकार हमारे सामने निम्नलिखित तथ्यों का उद्घाटन होता है-

- कविता में व्यक्त अनुभव सामान्य अनुभवों से आगे की वस्तु होता है।
- इसलिए कविता की भाषा गद्य से भिन्न होती है ।
- अर्थ ग्रहण के लिए पाठक कवि की तरह ही सर्वतंत्र होते हैं ।
- सामान्य सम्प्रेषण कविता का गुण नहीं है, ठीक उस अर्थ में जिस अर्थ में वह गद्य का गुण है।
- कविता की इस व्यक्तिगत व्याख्या में आज के पाठक सभी बाह्य प्रतिबन्धों से हटकर, भीतरी मुक्ति का अनुभव करते हैं । उसके उपचेतन को इससे संतोष लाभ होता है ।
- इसके निमित्त नई कविता संक्षेप शैली का अनुगमन कर रही है ।
- नई कविता में रागात्मक अनुक्रम आया है ।
- उपचेतन की गुत्थियों से उलझना कविता की नियति है ।
- प्रपद्यवादी कवि पाठक की बौद्धिकता को नहीं, ऐन्द्रिकता को जगाना चाहते हैं ।

शोध-विषय की आवश्यकता -

शोध विषय की आवश्यकता विभिन्न क्षेत्रों में नई जानकारी प्राप्त करने और समस्याओं का समाधान करने के लिए होती है। यह समय, धन, और संसाधनों की बर्बादी से बचाती है और नए आविष्कारों और विकास को प्रोत्साहित करती है, उसे समझने और विश्लेषण करने के लिए होती है, जिससे किसी विषय या समस्या का समाधान निकाला जा सके और नई जानकारी प्राप्त की जा सके। यह समस्या के साथ संबंधित हो सकती है, या फिर नई विकासों और अनुसंधानों के लिए भी किया जा सकता है। इससे विभिन्न क्षेत्रों में नई जानकारी प्राप्त करने और समस्याओं का समाधान करने के लिए होती है। यह समय, धन, और संसाधनों की बर्बादी से बचाती है और नए आविष्कारों और विकास को प्रोत्साहित करती है। शोध विषय की आवश्यकता उसके अद्वितीयता, महत्व, और सामर्थ्य को समझने के लिए होती है। यह आपको विशेष रूप से उस विषय में अध्ययन करने की दिशा तय करने में मदद करती है।

Aniruddh

हिंदी साहित्य के आधुनिक काल में विभिन्न काव्य आंदोलन उभर कर सामने आए जिसमें प्रगतिवाद के विरोध में प्रपद्यवाद को साहित्य में रोपने का प्रयास किया है, इसके प्रतिनिधि कवियों ने इसे स्थापित करने का हर संभव प्रयास किया लेकिन तत्कालीन कवियों ने इसे खुद को अलग रखा। नकेनवाद के तीनों प्रतिनिधि कवियों के समग्र साहित्य का अध्ययन करते हुए उनके सभी पहलुओं का अध्ययन करना जो अभी तक लोंगो की दृष्टि से दूर रहे व अछूते रह गए हैं। नकेनवादके सम्पूर्ण साहित्य को प्रसिद्धि क्यों नहीं मिल सकीतथा परवर्ती साहित्य पर इसका क्या प्रभाव रहा, इसको भी स्पष्ट करना इस शोध-कार्य का उद्देश्य है।

शोध-विषय का महत्त्व -

शोध विषय का महत्त्व विभिन्न क्षेत्रों में अन्वेषण करने के लिए होता है। यह नए ज्ञान की खोज, समस्याओं का समाधान, तकनीकी या वैज्ञानिक प्रगति, सामाजिक अध्ययन, व्यवसायिक विकास आदि के लिए महत्वपूर्ण है। शोध विषय के माध्यम से हम अपनी जानकारी को बढ़ाते हैं, समस्याओं का समाधान ढूंढते हैं और समाज में प्रगति को बढ़ावा देते हैं। इससे यह नए ज्ञान को खोजने, समस्याओं के समाधान के लिए नए दृष्टिकोण प्रदान करने, तकनीकी और सांस्कृतिक उत्पादों की उत्पन्नता में मदद करने, और समाज के लिए उपयोगी निर्देशकों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शोध विषय चयन और अध्ययन आपको आत्म-संवाद करने, अपने विचारों को व्यक्त करने, और समस्याओं को समझने के लिए आत्म-अध्ययन का मौका देता है।

नकेनवाद पर स्वतंत्र रूप से अनेक कार्य हो चुके हैं लेकिन **'हिंदी के नकेनवादी कवियों के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन'** शोध विषय पर अभी तक ऐसा कोई कार्य नहीं हुआ है। इस शोध-विषय में जिसमें नकेनवादी प्रतिनिधि कवियों के समग्र साहित्य को केंद्र में रखकर विस्तृत व सारगर्भित आलोचनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

अतः यह शोधार्थी द्वारा किया गया नवीन व मौलिक कार्य होगा जिसके तहत इसमें शोध की अपार संभावनाएं और चुनौतियां भी हैं जिन्हें स्वीकार कर शोधार्थी शोध-कार्य को सफल बनाने का प्रयास करेगा।

Awenddh

पूर्वकृत शोध-कार्य -

नकेनवाद पर केंद्रित अब तक जो भी शोध-कार्य संपन्न हुए वह निम्न हैं -

नकेनवाद और नलिन विलोचन शर्मा को ध्यान में रखाकर अनेक शोध कार्य हुए हैं लेकिन नकेनवाद के तीनों कवियों के साहित्य लेकर मेरे संज्ञान में अभी तक कोई भी शोध-कार्य नहीं हुआ।

1. 'प्रपद्यवाद: नई कविता का परिदृश्य', सुरेंद्र प्रसाद यादव 'स्निग्ध', पटना विश्वविद्यालय, पटना बिहार

शोध-विषय के आधार ग्रन्थ -

1. तिवारी विनोद व अजय आनंद, नलिन रचनावली समग्र (खंड 1-5), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
2. शर्मा नलिन विलोचन, केसरी कुमार व नरेश 'नकेन के प्रपद्य' मोतीलाल बनारसी प्रकाशन, पटना, 1956
3. शर्मा नलिन विलोचन, केसरी कुमार व नरेश 'नकेन-2' परिजात प्रकाशन, पटना, 1981
4. कुमार केसरी, साहित्य के नए धरातल: शंकाएँ और दिशाएं, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1980
5. श्री नरेश, कविता और हिंदी-कविता, हिंदी साहित्य संसार, पटना, 1966
6. डॉ. नरेश, चाँदी की घंटियाँ, नवजोत पब्लिकेशन, मालेरकोटला, पंजाब, 1980
7. डॉ. नरेश, जिज्ञासा, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, 1976
8. सिंह गोपेश्वर, नलिन विलोचन शर्मा संकलित निबंध, नेशलन बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2010
9. कुमार केसरी, नासूर कहानियां (कहानी संग्रह)
10. कुमार केसरी, निवेदिता (ललित निबंध)

पत्र-

1. 'प्रकाश' पत्र 1952 ई, संपादक- नरेश

शोध-परिकल्पना -

शोध परिकल्पना एक प्रक्रिया है जिसमें आप एक निर्दिष्ट शोध विषय को परिभाषित करते हैं, जिसमें आप उसकी महत्वाकांक्षा, उपयोगिता, अवधारणा, और आपके शोध के प्रमुख धाराओं को संदर्भित करते हैं। इस प्रक्रिया में, आप शोध क्षेत्र की सीमा को परिभाषित करते हैं, संबंधित पिछले अध्ययनों और

लिटरेचर का समीक्षण करते हैं, और अपने शोध के उद्देश्य, मानक, और हिदायत को स्पष्ट करते हैं। जिसमें शोध का मुख्य उद्देश्य, महत्वपूर्ण सवाल, हाल ही में किए गए शोध का समीक्षा, और आगे की कार्रवाई की योजना किया जाता है। इस प्रक्रिया में विशेष ध्यान दिया जाता है कि किस प्रकार के डेटा, संसाधन और मेथडोलॉजी का उपयोग किया जा सकता है ताकि उचित प्रयोगों और प्रक्रियाओं के साथ शोध किया जा सके।

जैसे कि नकेनवादी कवियों में नलिन विलोचन शर्मा पर केंद्रित कुछ शोध कार्य अवश्य हुए हैं जबकि केसरी कुमार व नरेश को अनदेखा किया गया है, आलोचकों ने इसे उतना महत्त्व क्यों नहीं दिया जितना अन्य तत्कालीन साहित्य को। इसलिए मेरे शोध कार्य का विषय नकेनवाद के तीनों प्रतिनिधि कवियों के संपूर्ण साहित्य का समग्रता में आलोचनात्मक अध्ययन करना जिससे कि प्रपद्यवाद को इतिहास में उन कारणों की खोज कर सके जिसे साहित्यिक इतिहासकारों ने अनदेखा करने की कोशिश की है। केशरी कुमार और नरेश का साहित्य प्रकाशित होने के बाद पुस्तकालयों में दब कर रह गया है हालाँकि नलिन विलोचन शर्मा के साहित्य की रचनावली राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हो चुकी है इस तरह केशरी कुमार और नरेश के साहित्य को पुस्तकालयों में खोजकर एवं शोध कार्य की अवधि में अन्य दृष्टि अपने शोध का हिस्सा बनाना मेरी जिम्मेदारी शामिल होगा।

मेरा शोध विषय 'हिंदी के नकेनवादी कवियों के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन' है जिस पर मैंने संभावित पांच अध्याय मुख्य रूप से बनाया है तथा शोध-कार्य करने के दौरान सारगर्भित अध्ययन करते हुए उप-अध्यायों का वर्गीकरण करने का प्रयास करूँगा।

शोध-प्रविधि –

क्योंकि मेरा शोध-विषय हिंदी साहित्य के आधुनिक काल से है, जो मुख्य रूप से ऐतिहासिक है। इसलिए इसमें प्रमुखता से विश्लेषणात्मक ऐतिहासिक एवं आलोचनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा। इसके अतिरिक्त यथास्थान व्याख्यात्मक, समाजशास्त्रीय, समीक्षात्मक, गवेषणात्मक, तुलनात्मक व निर्णयात्मक शोध प्रविधियों का भी प्रयोग किया जाएगा।

Anuradha

अध्याय-विभाजन -

अध्याय - 1 : नकेनवाद की पृष्ठभूमि और उसका आलोचनात्मक अध्ययन

अध्याय - 2 : नलिन विलोचन शर्मा के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन

अध्याय - 3 : केसरी कुमार के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन

अध्याय - 4 : नरेश के साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन

अध्याय - 5 : नकेनवादी साहित्य में काव्य सौष्ठव

उपसंहार

परिशिष्ट

सन्दर्भ ग्रन्थ

प्राथमिक (आधार) ग्रन्थ :

1. तिवारी विनोद व अजय आनंद, नलिन रचनावली समग्र (खंड 1-5), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021
2. शर्मा नलिन विलोचन, केसरी कुमार व नरेश 'नकेन के प्रपद्य' मोतीलाल बनारसी प्रकाशन, पटना, 1956
3. शर्मा नलिन विलोचन, केसरी कुमार व नरेश 'नकेन-2' परिजात प्रकाशन, पटना, 1981
4. कुमार केसरी, साहित्य के नए धरातल: शंकाएँ और दिशाएं, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली,1980
5. श्री नरेश, कविता और हिंदी-कविता, हिंदी साहित्य संसार, पटना, 1966
6. डॉ. नरेश, चाँदी की घंटियाँ, नवजोत पब्लिकेशन, मालेरकोटला, पंजाब, 1980

Anuradha

7. डॉ. नरेश, चाँदी की घंटियाँ, नवजोत पब्लिकेशन, मालेरकोटला, पंजाब, 1980
8. डॉ. नरेश, जिज्ञासा, आर्य बुक डिपो, करोल बाग, नई दिल्ली, 1976
9. सिंह गोपेश्वर, नलिन विलोचन शर्मा संकलित निबंध, नेशलन बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, 2010
10. कुमार केसरी, नासूर कहानियां (कहानी संग्रह)
11. कुमार केसरी, निवेदिता (ललित निबंध)

द्वितीयक (सहायक) ग्रन्थ

1. प्रसाद डॉ० विश्वनाथ, प्रपद्यवाद : सिद्धांत और साधना, तूलिका प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990
2. सहाय निरंजन, प्रपद्यवाद और नलिन विलोचन शर्मा, युगांतर प्रकाशन, नई दिल्ली 2016
3. यादव डॉ० सुरेंद्र प्रसाद 'स्निग्ध, 'प्रपद्यवाद और केसरी कुमार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 2017
4. सिंह डॉ० कल्याणी कुसुम, प्रज्ञ पुरुष : नलिन विलोचन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना, 2018
5. वर्मा डॉ० धीरेन्द्र (प्रधान संपादक), हिंदी साहित्य कोश भाग-1, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1984
6. परिषद् पत्रिका (शोध त्रैमासिक) जुलाई 2018-दिसम्बर 2018 अंक: 2-3 बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना
7. नवल नन्द किशोर, हिंदी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

शोध निर्देशक

Anuruddh
10-04-24
डॉ० अनुरुद्ध सिंह
हिंदी, विभागाध्यक्ष
मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा

विभागाध्यक्ष
हिंदी विभाग
मारवाड़ी महाविद्यालय, दरभंगा

शोधार्थी

Manoj Kumar
मनोज कुमार
अनुक्रमांक : E2209070
पंजीकरण संख्या : 21905990
ल०ना०मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

Anuruddh